

# बहारे तहरीर

(हिस्सा 6)

इल्मी, तहकीकी और इस्लाही तहरीरों  
पर मुश्तमिल एक गुलदस्ता

नाशिर :  
अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

# ABOUT US

---

Abde Mustafa Official, a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at  
Our motto : Serving Quraano Sunnat, preaching Ilme Deen and  
to reform people.

This team came into existence in the year 2012 and in very  
few years this team did a lot of acts.

There is also a special place of Abde Mustafa Official on  
social media networking sites.

Lots of people from all over the world are connected to us  
via Facebook, WhatsApp, Instagram, Telegram, YouTube and  
Blogger.

Abde Mustafa Official



## ABDE MUSTAFA OFFICIAL

[abdemustafaofficial.blogspot.com](http://abdemustafaofficial.blogspot.com)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## सुन्नी से दोस्ती करें

किसी से दोस्ती करना उस से रिश्ता क़ाइम करने के बराबर है लिहाज़ा हमें चाहिये कि सुन्नी सहीहुल अक़ीदा से दोस्ती करें।

हमारे नबी ﷺ ने इरशाद फरमाया कि इंसान अपने दोस्त के दीन पर होता है, तो तुम में से हर एक को देख लेना चाहिये कि वो किस से दोस्ती कर रहा है।

(سنن ابی داؤد، باب من یؤمر عن یجالس، ج 4، ص 407 به حواله آداب الصیحة وحسن العشرة، اردو، ص 17)

किसी को अपना दोस्त बनाने से पहले अच्छी तरह मालूम कर लीजिये कि उस का दीन क्या है और अक़ीदा क्या है वरना आप को अपनी गलती की कीमत अपना दीन दे कर चुकानी पड़ सकती है।

### अब्दे मुस्तफ़ा

## खायें लेकिन शोर ना मचायें

आज मैंने बिरयानी खायी, आज मेरे घर में गाजर का हलवा बना था, आज हम ने फुलॉ सब्ज़ी खायी और फुलॉ फुलॉ फ़ल खाये.....,

ऐसा कुछ भी कहने से पहले देख लीजिये कि आपके आस पास किस तरह के लोग मौजूद हैं। कहीं ऐसा ना हो कि उन में से किसी ने कई दिनों से अच्छा खाना ना खाया हो और आप की बातें सुनकर उसे तकलीफ़ महसूस हो।

हमारे प्यारे नबी ﷺ ने इरशाद फरमाया : तुम अपनी हांडी (में पकने वाले खाने) की बू से अपने पड़ोसियों को तकलीफ मत पहुँचाओ।

(ملقطاً: کنز العمال فی سنن الاقوال والافعال، اردو، ج 9، ص 42، ر 24897)

इस हदीस को सामने रखकर ये भी कहा जा सकता है कि खाने की तसवीर (फोटो) खींच कर फेसबुक पर अपलोड करना या किसी दूसरे ज़रिये से अपने दोस्तों या किसी और को भेजना भी दूरुस्त नहीं है।

आप खायें लेकिन शोर ना मचायें।

### अब्दे मुस्तफ़ा

## आशिक की ज़कात

हज़रते अबू बकर शिबली अलैहिर्रहमा से किसी ने ज़कात का निसाब पूछा।

आप ने फरमाया कि फ़िक्क़ का मस'अला पूछ रहे हो या इश्क़ की बात कर रहे हो?

उस बन्दे ने कहा कि दोनो तरह इरशाद फरमा दें।

आप ने फरमाया कि शरीअत की ज़कात अढ़ाई फी सद (2.5%) है, जब कि इश्क़ की ज़कात सारे का सारा माल और उस के साथ साथ जान का नज़राना पेश करने से अदा होती है।

उस बन्दे ने कहा कि इश्क़ की ज़कात की क्या दलील है?

आप ने फरमाया की इस की दलील ये है कि सैय्यिदुना सिद्दीक़ - ए- अकबर रदिअल्लाहु

त'आला अन्हु ने अपना सारा माल नबीय्ये करीम ﷺ की खिदमत में पेश कर दिया और अपनी बेटी सैय्यिदा आइशा सिद्दीका रदिअल्लाहु त'आला अन्हा नज़राने के तौर पर पेश कर दी।

(मکتوبات یحییٰ منیری، ص 34 بہ حوالہ ضرب حیدری، ص 51)

## अब्दे मुस्तफ़ा

### मोहताज का जब ये आलम है

हज़रते शैख़ अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ रहीमहुल्लाहु त'आला के शागिर्द हज़रते अल्लामा अहमद बिन मुबारक अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं अपने उस्तादे मुहतरम के साथ महवे कलाम था। मैंने आप रहीमहुल्लाहु त'आला के सामने हज़रते सुलेमान अलैहिस्सलाम का तज़िकरा किया कि अल्लाह त'आला ने उनके लिये किस तरह जिन्नो इन्स, शयातीन और हवा को मुसख़्खर कर दिया था!

मैंने ये भी ज़िक्र किया कि हज़रते दाऊद अलैहिस्सलाम को ये मोज़िज़ा अता किया गया कि लोहा उन के हाथ में आ कर आटे की टिकिया की तरह नर्म हो जाता!

(फिर मैंने कहा) हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम को कोढियों को तंदरुस्त करने, मादर ज़ाद अँधों को बीना करने और मुर्दों को ज़िन्दा करने का मोज़िज़ा अता फरमाया था!

मेरी इस गुफ़्तगू से आप रहीमहुल्लाह ने समझा कि शायद मैं ये कह रहा हूँ कि जब हुज़ूर ﷺ सैय्यिदुल खल्क़ हैं और तमाम अम्बिया से अफज़ल हैं तो फिर आप ﷺ से इस तरह के



मोजिज़ात क्यों रुनुमा नहीं हुये और जो मोजिज़ात आप से रुनुमा हुये उन का अन्दाज़ जुदागाना है।

इस के बाद उस्तादे मुहतरम ने फरमाया कि वो तमाम बादशाही जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हज़रते सुलेमान अलैहिस्सलाम को अता फरमायी, हज़रते दाऊद अलैहिस्सलाम के दस्ते अक्दस में लोहे को नर्म कर दिया था और जिन इनायात से अल्लाह त'आला ने हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम को नवाज़ा था, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ये सब कुछ बल्कि इस से बहुत ज़्यादा आप ﷺ की उम्मत के औलिया -ए- कामिलीन को अता किया है!

अल्लाह त'आला ने औलिया के लिये जिन्नो इन्स, शयातीन, हवा और मलाइका बल्कि तमाम आलम को मुसख़्खर कर दिया है।

अल्लाह ने इन को कुदरत बख़्शी है वो मादर ज़ाद अँधों को बीना कर देते हैं, अपाहिजों को सिहहत अता करते हैं, मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं लेकिन ये वो पोशीदा अम्र है जो मख़्लूक के लिये ज़ाहिर नहीं किया जाता ताकि लोग उन की तरफ हमा तन माइल हो कर अपने अल्लाह को भूल ना जायें।

औलिया -ए- किराम को ये कुदरत वा तवानाई ताजदार -ए- मदीना ﷺ की बरकत से हासिल हुयी है, ये सब आप ﷺ के मोजिज़ात ही हैं।

**अब्दे मुस्तफ़ा**

**AM ABDE MUSTAFA**

(الابرين)

## **आप का ज़िक्र है खास ज़िक्रे खुदा**

नबीय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, सरकार -ए- मदीना ﷺ का ज़िक्र करना, खुदा का ज़िक्र करना है।

अल्लाह त'आला ने आप ﷺ के ज़िक्र को बुलंद किया है और अपना ज़िक्र करार दिया है। हदीस -ए- कुदसी है, अल्लाह त'आला फरमाता है :

मैं ने ईमान का मुकम्मल होना इस बात पर मौकूफ कर दिया है कि (ए महबूब) मेरे ज़िक्र के साथ तुम्हारा ज़िक्र भी हो और मैंने तुम्हारे ज़िक्र को अपना ज़िक्र ठहरा दिया है पस जिस ने तुम्हारा ज़िक्र किया उस ने मेरा ज़िक्र किया।

कुरआन -ए- करीम में अल्लाह त'आला के जिक्र के साथ जिक्रे रसूल ﷺ के जलवे कई जगह नज़र आते हैं, चुनांचे इरशाद -ए- बारी है :

(1) तो ऐलान -ए- जंग सुन लो अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से।

(البقرة:279)

(2) और जो हुक्म माने अल्लाह और उस के रसूल का।

(النساء:13)

(3) और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफरमानी करे।

(النساء:14)

(4) हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का।

(النساء:59)

(5) तो उसे अल्लाह और उस के रसूल के हुज़ूर रुजू करो।

(النساء:59)

(6) अल्लाह की उतरी हुई किताब और रसूल की तरफ आओ।

(النساء:61)

(7) और जो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म माने ।

(النساء:70)

(8) जिसने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने अल्लाह का हुक्म माना।

(النساء:80)

(9) और जो अपने घर से निकला अल्लाहो रसूल की तरफ हिजरत करता।

(النساء:100)

(10) ईमान रखो अल्लाह और उस के रसूल पर।

(النساء:136)

(11) और काफिर चाहते हैं कि अल्लाह से उस के रसूलों को जुदा कर दें।

(النساء:150)

(12) और जो अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाये।

(النساء:152)

(13) अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ।

(النساء:171)

(14) जो अल्लाह और उस के रसूल से लड़ते हैं।

(البائدة:33)

(15) तुम्हारे दोस्त नहीं मगर अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले।

(البائدة:55)

(16) और जो अल्लाह और उस के रसूल और मुसलमानों को अपना दोस्त बनाये।

(البائدة:56)

(17) आओ उसकी तरफ जो अल्लाह ने उतारा और रसूल की तरफ।

(البائدة:104)

(18) तो ईमान लाओ अल्लाह और उस के रसूल बे पढ़े गैब बताने वाले पर।

(الاعراف:158)

(19) अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो।

(الانفال:1)

(20) ये इस लिये कि इन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से मुखालिफत की।

(الانفال:13)

(21) और जो अल्लाह और उस के रसूल से मुखालिफत किये।

(الانفال:13)

(22) अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो।

(الانفال:20)



(23) ए ईमान वालों! अल्लाह और उस के रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो जाओ।

(الانفال:24)

(24) अल्लाह और रसूल से दगा ना करो।

(الانفال:27)

(25) तो इसका पाँचवा हिस्सा खास अल्लाह और उस के रसूल का है.....अल आयत।

(الانفال:41)

(26) बेज़ारी का हुक्म सुनाना है अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से।

(التوبه:1)

(27) अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से तमाम लोगों की तरफ बड़े हज के दिन ऐलान है।

(التوبه:3)

(28) अल्लाह बेज़ार है मुशरिकों से और उस का रसूल।

(التوبه:3)

(29) मुशरिकों के लिये अल्लाह और उस के रसूल के पास कोई अहद क्यों कर होगा।

(التوبه:7)

(30) अल्लाह और उस के रसूल और मुसलमानों के सिवा किसी को अपना राज़दार ना बनायेंगे।

(التوبه:16)

(31) ये चीज़ें अगर तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल से ज़्यादा प्यारी हों।

(التوبه:24)

(32) और हराम नहीं मानते उस चीज़ को हराम किया अल्लाह और उस के रसूल ने।

(التوبه:29)

(33) ये कि वो अल्लाह और उस के रसूल से मुन्किर हुये।

(التوبه:54)

(34) और क्या ही अच्छा होता अगर वो इस पर राज़ी होते और जो अल्लाह और उस के रसूल ने इन को दिया।

(التوبه: 59)

(35) और कहते हैं हमें अल्लाह काफी है अब देता है अल्लाह हमें अपने फ़ज़ल से और उस का रसूल।

(التوبه: 59)

(36) और अल्लाहो रसूल का हक़ ज़्यादा था कि उसे राज़ी करते।

(التوبه: 62)

(37) जो मुखालिफ़त करे अल्लाह और उस के रसूल की।

(التوبه: 63)

(38) और अल्लाहो रसूल का हुक्म मानें।

(التوبه: 71)

(39) और उन्हें क्या बुरा लगा यही ना कि अल्लाहो रसूल नें उन्हें गनी कर दिया।

(التوبه: 74)

(40) इस लिये कि वो अल्लाह और उस के रसूल के मुन्किर हुये।

(التوبه: 80)

(41) बेशक वो अल्लाह और रसूल से मुन्किर हुये।

(التوبه: 84)

(42) वो जिन्होंने अल्लाहो रसूल से झूठ बोला था।

(التوبه: 90)

(43) जब कि अल्लाह और उस के रसूल के खैर खा रहें।

(التوبه: 91)

(44) और अब अल्लाहो रसूल तुम्हारे काम देखेंगे।

(التوبه: 94)

(45) और अब अल्लाहो रसूल तुम्हारे काम देखेंगे।

(التوبه:105)

(46) और (ये मस्जिद -ए- ज़रार) उस के इंतजार में हैं जो पहले से अल्लाह और उस के रसूल का मुखालिफ है।

(التوبه:107)

(47) हम ईमान लाये अल्लाह और उस के रसूल पर।

(النور:47)

(48) और जब अल्लाह और उस के रसूल की तरफ बुलाये जायें।

(النور:48)

(49) या ये डरते हैं अल्लाहो रसूल इन पर जुल्म करेंगे।

(النور:50)

(50) जब अल्लाह और रसूल की तरफ बुलाये जायें कि रसूल इन में फैसला फ़रमाये।

(النور:51)

(51) और जो हुक्म माने अल्लाह और उस के रसूल का।

(النور:52)

(52) तुम फ़रमाओ कि हुक्म मानो अल्लाह और हुक्म मानो रसूल का।

(النور:54)

(53) ईमान वाले तो वही हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर यक़ीन लाये।

(النور:62)

(54) जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाते हैं।

(النور:62)

(55) हमे अल्लाहो रसूल ने वादा न दिया।

(الاحزاب:12)

(56) बोले ये है वो जो हमे वादा दिया था अल्लाह और उस के रसूल ने।

(الاحزاب: 22)

(57) और सच फरमाया अल्लाह और उस के रसूल ने।

(الاحزاب: 22)

(58) अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल को चाहती हो।

(الاحزاب: 29)

(59) और जो तुम में फ़रमा बरदार रहे अल्लाह और उस के रसूल की।

(الاحزاب: 31)

(60) और अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो।

(الاحزاب: 32)

(61) जब अल्लाहो रसूल कुछ हुक्म फ़रमा दे।

(الاحزاب: 36)

(62) और जो हुक्म न माने अल्लाह और उस के रसूल का।

(الاحزاب: 36)

(63) जिसे अल्लाह ने नेमत दी और तुमने उसे नेमत दी।

(الاحزاب: 57)

(64) बेशक जो इज़ा देते है अल्लाह और उस के रसूल को।

(الاحزاب: 66)

(65) हाय किसी तरह हम ने अल्लाह का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता।

(الاحزاب: 66)

(66) और जो अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमा बरदारी करे।

(الاحزاب: 71)

(67) अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो।

(محمّد: 33)

(68) ताकि तुम लोग अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ।

(الفتح:9)

(69) वो जो तुम्हारी बैअत करते हैं वो अल्लाह ही से बैअत करते हैं

(الفتح:10)

(70) और जो ईमान ना लाये अल्लाह और उस के रसूल पर।

(الفتح:13)

(71) और जो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म माने।

(الفتح:17)

(72) अल्लाह और उस के रसूल से आगे ना बढ़ो।

(الحجرات:1)

(73) और अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल के फरमा बरदारी करोगे

(الحجرات:14)

(74) ईमान वाले तो वही हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाये।

(الحجرات:15)

(75) और वो जो अल्लाह और उस के सब रसूलो पर ईमान लाये।

(الحديد:19)

(76) ये इस लिए कि तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखो।

(المجادلة:4)

(77) बेशक जो मुखालिफत करते हैं अल्लाह और उस के रसूल की।

(المجادلة:5)

(78) और अल्लाह और उस के रसूल के फरमा बरदार रहो।

(المجادلة:13)

(79) बेशक वो जो मुखालिफत करते हैं अल्लाह और उस के रसूल की।

(المجادلة:20)

(80) अल्लाह लिख चुका कि ज़रूर मैं ग़ालिब आऊंगा और मेरे रसूल।

(المجادلة:21)

(81) और जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल की मुखालिफत की।

(المجادلة:22)

(82) ये इस लिए कि वो अल्लाह और उस के रसूल से जुदा रहे।

(الحشر:40)

(83) (वो गनीमत) अल्लाह और उस के रसूल की है।.....अल आयत

(الحشر:70)

(84) और अल्लाहो रसूल की मदद करते हैं।

(الحشر:80)

(85) ईमान रखो अल्लाह और उस के रसूल पर।

(الصف:11)

(86) और इज़्जत अल्लाह और उस के रसूल और मुसलमानों के लिए ही है।

(المنافقون:8)

(87) तो ईमान लाओ अल्लाह और उस के रसूल पर।

(التغابن:8)

(88) और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो।

(التغابن:12)

(89) और जो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म माने।

(الجن:23)

(ملخصاً: کمال و جمال حبیب، ص 42 تا 49)



## ज़िक्रे खुदा जो उन से जुदा चाहो नजदियो वल्लाह ज़िक्रे हक़ नही कुंजी सकर की है

इमाम -ए- अहले सुन्नत फरमाते हैं कि ए नजदियो! अगर तुम ये चाहते हो कि हुज़ूर के ज़िक्र को खुदा के ज़िक्र से जुदा कर दिया जाए तो खुदा की कसम! ऐसा ज़िक्र खुदा का ज़िक्र ना कहला सकेगा बल्कि (वो ज़िक्र) जहन्नम की चाबी साबित होगा और तुम्हे दोज़ख में गिरा कर छोड़ेगा।

(انظر: شرح کلام رضا، ص 590)

### अब्दे मुस्तफ़ा

### अब क्या देखूँ जब तू सामने है

हज़रते आइशा सिद्दीका रदिअल्लाहु त'आला अन्हा फरमाती हैं :

मैं चरखा कात रही थी और हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ मेरे सामने बैठे हुये अपने जूतों को पेवन्द लगा रहे थे।

आप ﷺ की पेशानी मुबारक पर पसीने के क़तरे थे जिन से नूर को शुआयें निकल रही थी। इस हसीन मंज़र ने मुझे चरखा कातने से रोक दिया, बस मैं आप को देख रही थी....., आप

ﷺ ने फरमाया : तुझे क्या हुआ?

मैंने अर्ज़ की : आप की पेशानी मुबारक पर पसीने के क़तरे हैं जो नूर के सितारे मालूम होते हैं। अगर (अरब का मशहूर शायर) अबू कबीर आप को इस हालत में देख लेता तो यक़ीन कर लेता कि उस के शेर का मिस्दाक़ आप ही हैं कि :

واذا نظرت الى اسرة وجهه

برقت بروق العارض المتهلل

यानी जब मैं उस के रूये मुबारक को देखता हूँ तो उस के रुखसार की चमक मिस्ले हिलाल नज़र आती है।

(ابن عساکر، ابو نعیم، دیلمی، خطیب، زر قانی علی المواهب، ذکر جمیل به حوالہ کمال و جمال حبیب، ص 180)

### अब्दे मुस्तफ़ा

## ईद में गुनाहों की शॉपिंग

ईद के लिये नये कपड़े मोल लेने के साथ साथ आज कल गुनाहों की भी खरीदारी हो रही है.....!

शायद ही कोई ऐसा मार्केट होगा जिस में बे पर्दा औरतों का रेला ना लगा हो।

खुले आम औरतें दुकानदार मर्दों से बात चीत कर रही हैं और शौहर साहिब पहलू में खड़े देख रहे हैं क्योंकि उन के नज़दीक तो "ये सब चलता है।"

अभी जो हालात हैं, एक नेक आदमी मार्केट में क़दम रखने की सोच भी नहीं सकता। ये "रेला" सडकों से ले कर गलियों तक लगा हुआ है।

अगर किसी वजह से ये मनाज़िर देखने का इत्तिफाक़ हो जाता है तो दिल खून के आँसू रोता है।

ये हमें क्या हो गया है? हम किधर जा रहे हैं? क्या ईद की शॉपिंग इतनी ज़रूरी है कि हम शरीअत को पीठ पीछे डाल दें?

अगर शॉपिंग से वक़्त मिल जाये तो कभी सोचें कि क्या हम ने गुनाहों की शॉपिंग तो नहीं की?

**अब्दे मुस्तफ़ा**

### क्या ऐसा नहीं हो सकता?

क्या ऐसा नहीं हो सकता कि एक शौहर अपनी बीवी के लिये "शरीफों वाले" कपड़े खरीद लाये और बीवी उसे खुशी खुशी क़बूल कर ले?

नहीं नहीं बिल्कुल नहीं! ये मैंने क्या कह दिया! ऐसा कैसे हो सकता है.....!

बीवी साहिबा की पसंद भी तो कोई चीज़ है, शौहर पर तो लाज़िम है कि एक दिन बल्कि दो दिन और अगर ना हो तो तीन दिन का वक़्त निकालकर बीवी को पूरे बाज़ार घुमा कर शॉपिंग करवाये और ऐसे कपड़े दिलवाये जो मुहल्ले में सब से अलग हो ताकि देखने वालों के तास्सुरात (कमेंट्स) के इज़हार से दोनों मियाँ बीवी को सुकून हासिल हो।

ये भी देखना ज़रूरी है कि इस साल ईद में "क्या चल रहा है?" (मतलब किस का ट्रेंड है) कहीं ऐसा ना हो कि हम पुराने वर्ज़न (मॉडल) के कपड़े खरीद लें और बाज़ार में कुछ और चल रहा हो।

बीवी साहिबा खुद कपड़े का कलर, डिज़ाइन, क्वालिटी, ब्रांड और कीमत वगैरा देखेंगी और दुकानदार से खुद मोल तोल भी करेंगी।

अब हम पर्दे की बात करेंगे तो ये तक कहा जा सकता है कि "निय्यत अच्छी होनी चाहिये" लिहाज़ा हम खामोश हैं क्योंकि शौहर, बीवी, दुकानदार और आस पास में मौजूद लोग, सब की निय्यत अच्छी है और हमारी ही सोच खराब है।

गुस्ताखी मुआफ़ करें, हम ज़्यादा बोल गये.....!

## अब्दे मुस्तफ़ा

### लव या अरेंज?

शादियों का जो तरीका अभी चल रहा है, उस की वजह से कई लोग इस गलत फ़हमी में पड़ जाते हैं कि उन्होंने अरेंज मेरिज की है।

ज़रा गौर करें कि अरेंज मेरिज आज कल होती कहाँ है?

रिश्ता तय होने के फ़ौरन बाद लड़का और लड़की अपना अपना मोबाइल सम्भाल लेते हैं और दिन रात एक दूसरे से गप शप जारी रहती है फिर मुलाकातों और बातों पर बातें.....,

ये तो घुमा फिरा कर लव मैरिज ही है जिसे अरेंज का नाम दे दिया गया है।

ऐसा भी होता है कि शादी की तारीख महीनों बल्कि एक साल के बाद की रखी गई है और इधर लड़के और लड़की के दरमियान मुलाकातों और बातों सिलसिला जारी है जो शादी तक चला तो चला वरना कुछ गड़बड़ होने पर शादी कैसल!

एक दूसरे को देख लिया, बातें कर ली, हाथों में हाथ देकर पार्क वगैरा भी घूम लिया, ऑनलाइन चेटिंग भी कर ली, ऑफ़लाईन भी नहीं छोड़ा तो अब हमें कोई समझा दे कि ये अरेंज मेरिज कैसे हुआ? ये तो खालिस लव मेरिज है जिस में थोड़ी सी तब्दीली (चेंजिंग) है जैसे लव मेरिज में खुले आम एक दूसरे को देख कर पसंद किया जाता है उसी तरह आज कल अरेंज मेरिज में भी किया जाता है, डेटिंग चेटिंग दोनों में होती है।

हो सकता है कोई ये कहे कि लव मेरिज में प्रपोज किया जाता है लेकिन यहाँ ऐसा नहीं है तो हम बता दें कि आज कल अरेंज मेरिज में भी प्रपोज का सिस्टम है जिसे मंगनी (इंगेजमेंट) का नाम दे दिया गया है।

दोनों में फर्क ये है कि वहाँ "आई लव यू" बोलकर प्रपोज किया जाता है और यहाँ मंगनी (इंगेजमेंट) में एक दूसरे से बात करने के बाद अँगूठी पहना कर प्रपोज किया जाता है।

वहाँ लड़की या लड़के की तरफ से इक्कारार और इंकार की गुंजाइश होती है तो यहाँ भी ऐसा ही होता है, अगर चाहो तो इक्कारार या इंकार।

ये लव मेरिज जिस पर अरेंज का लेबल लगा कर काम चलाया जा रहा है, इस में एक फाइदा लड़कों और लड़कियों को ये हो जाता है कि "सेफटी" पूरी मिलती है।

इस में दोनों महफूज रहते हैं, ना तो फोन पर बात करने से अपना बाप रोक सकता है और ना मुलाकात करने से उस का बाप!

हमारी इस तहरीर से वो लोग अपनी गलत फ़हमी का इलाज कर सकते हैं जिन्हें लगता है कि उन्होंने अरेंज मेरिज की है या करेंगे।

**अब्दे मुस्तफ़ा**

## **हमारी बेटी ऐसी वैसी नहीं है**

आज बेटी खुद बाज़ार से अपनी पसंद के कपड़े खरीद कर लाई है और बाप ,माँ और भाई बहुत खुश हैं के लड़की समझदार हो गयी है।

इस तरक्की से घर में किसी को तकलीफ़ नहीं है लेकिन अगर कोई दीनी इल्म रखने वाला "मौलवी टाइप शख्स" इस "तरक्की" को गलत कहने की ज़रूरत कर बैठे तो उसे फौरन जवाब दिया जाता है के "हमारी बेटी ऐसी वैसी नहीं है" अब उन्हें कौन समझाए के किसी की भी बेटी पैदाइशी "ऐसी वैसी " नहीं होती।

आप को भले ही अपनी बेटी पर भरोसा हो लेकिन हम तो इतना ही जानते हैं के वो भी इंसान हैं।

आप कुछ भी कहें लेकिन ये सच है के वो गुनाहों से मासूम नहीं है। आपकी नज़रो में आपकी बेटी का कोई दुश्मन नहीं है लेकिन एक खुला दुश्मन है जिसे शैतान कहा जाता है।

ये भी जान लीजिए के जितनी लड़कियां लड़कों के साथ भाग गयी, जिनके साथ ज़बरदस्ती ज़िना किया गया और जिन्होंने खुदखुशी कर ली वो सब लड़कियां भी पैदाइशी "ऐसी वैसी" नहीं थी बल्कि कईयो ने मिलकर कर उसे "ऐसी वैसी" बना डाला।

हमने इशारे में में बहुत कुछ कहा है अगर आप समझ गए तो फिर ये भी समझ लीजिए के ये "तरक्की" नहीं है।

आप नहीं समझे तो फिर आप की बेटी तो स्कूटी चलाना जानती ही है बस चाबी दे दीजिए और पैसे या कार्ड दे दीजिए ताकि वो भी इस ईद पर अपने पसंद की शॉपिंग कर सके।

वैसे दीनी इल्म रखने वाले "मौलवी टाइप लोग" अगर ज़्यादा बोले तो आप बिलकुल तवज्जोह ना दे क्यों के आप उनसे बेहतर जानते है के "तरक्की" किसे कहते है और आप की बेटी भी

"ऐसी वैसी" तो है नही।

**अब्दे मुस्तफ़ा**

### 30 जोड़े कपड़े

मेरे सामने एक शख्स ने अपने बेटे से कहा :

मेरे पास 25 से 30 जोड़े कपड़े हो गए है लिहाज़ा इस साल (ईद के लिए) मैं कपड़े नही लूँगा।

बेटे ने कहा : ऐसा कैसे हो सकता है, कपड़े तो आप को लेने ही होंगे.....!

किसी गरीब के पास पहनने के लायक दो जोड़े कपड़े नही हैं और किसी के पास 25 से 30 जोड़े कपड़े रखे हुए है, ये कैसा इंसान है?

अपने माल से जहाँ तक हो सके गरीबों की मदद कीजिये

अगर आप के पास कई जोड़े कपड़े है तो ज़रूरी नही के हर ईद पर नए कपड़े खरीदे जाएं।

अपने रिश्तेदारों में या जिन के बारे में आप जानते है के उन की माली हालत खराब है, उन की जिस तरह हो सके मदद कीजिये।

**अब्दे मुस्तफ़ा**

### इल्म हासिल करने का मक़सद

इल्म हासिल करने से पहले ये निय्यत होनी चाहिए कि हम उस पर अमल करेंगे और हो सका तो दूसरों को भी तरगीब दिलाएंगे।

इल्म को दुनिया के लिए हासिल करना कियामत की निशानियों में से एक है।

नबीय्ये अकरम ﷺ ने कियामत की एक निशानी ये बताई कि दीनी ग़र्ज़ के इलावा इल्म हासिल किया जाएगा।

(सनन الترمذی، باب ما جاء فی علّة حلول المسخ والخسف، ج 2211)

**अब्दे मुस्तफ़ा**

## दुनिया के लिए इल्म

नबीय्ये करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया के जो अल्लाह की रज़ा के इलावा किसी और मक़सद के लिए इल्मे दीन हासिल करे तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

(جامع الترمذی، باب ماجاء فیمن یطلب بعلمه الدنیا، ج 2655)

सुनन तिर्मज़ी के जिस बाब में ये हदीस है उस का उनवान है :

"باب ماجاء فیمن یطلب بعلمه الدنیا"

यानी "जो इल्म के ज़रिए दुनिया का तलबगार हो" और इसी बाब में एक और हदीस कुछ यूँ है

कि नबीय्ये करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया :

जो शख्स इल्म इस लिए हासिल करे ताकि उस के ज़रिए उलमा का मुकाबला करे या जुहला के साथ बहस करे या लोगो की तवज्जोह अपनी तरफ मबज़ुल करे तो अल्लाह त'आला उसे जहन्नम में दाखिल करेगा।

(ایضاً، ج 2654)

अल्लाह त'आला हमे फ़क़त अपनी रज़ा के लिए इल्म हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

**अब्दे मुस्तफ़ा**

**जा तुझे बरूशा**

अमीरुल मुअमिनीन, हज़रते मौला -ए- काइनात, अलिय्युल मुर्तजा शेरे खुदा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फ़रमाते हैं कि नबीय्ये करीम ﷺ की वफ़ात के बाद आप के रोज़ाए अनवर पर एक अअराबी हाज़िर हुआ और उस ने अपने आप को वहाँ गिरा दिया फिर मज़ार -ए- पाक की खाक को अपने सर पर डालते हुये कहने लगा :

या रसूलल्लाह! जो कुछ आप पर नाज़िल हुआ हम ने सुना और उन में से यह (आयत) भी है :

وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ  
تَوَّابًا رَّحِيمًا (النساء: 64)



यानी "और अगर वह अपनी जानों पर जुल्म कर बैठें तो ऐ हबीब! तुम्हारे हुजूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफाअत फ़रमाए तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पाएंगे।

(अज़राबी ने मज़ीद अर्ज़ किया) या रसूलल्लाह ﷺ मैं ने अपने ऊपर जुल्म किया है (यानी गुनाह किये हैं) और आप की बारगाह में हाज़िर हुआ हूँ ताकि आप मेरे लिये मग़्फ़िरत की दुआ फ़रमाएं।

क़ब्र -ए- अन्वर से आवाज़ आई : जा तुझे बख़्श दिया गया।

(وفا الوفا، ج 2، ص 1361 و تفسیر مدارک)

इमाम ए अहले सुन्नत क्या ख़ूब लिखते हैं

मुजरिम बुलाये आये है "जा'ऊका" है गवाह  
फिर रद्द हो कब ये शान करीमों के दर की है।

बा खुदा खुदा का यही है दर नहीं और कोई मफ़र मकर  
जो वहाँ से हो यहीं आके हो जो यहाँ नहीं वो वहाँ नहीं।

वही रब है जिसने तुझको हमा तन करम बनाया  
हमें भीख माँगने को तेरा आस्ताँ बताया

टीम अब्दे मुस्ताफ़ा

## लिखने और बोलने से पहले सोच लीजिये

नबीय्ये पाक ﷺ का फरमान है :

बंदा कभी सिर्फ एक बात अल्लाह त'आला की रज़ा के खातिर बोलता है और उस को गुमान भी नहीं होता कि ये बात चलते चलाते कहाँ तक पहुँच जायेगी और उस की सिर्फ यही एक बात क्रियामत तक के लिये रज़ा -ए- इलाही का ज़रिया बन जाती है और कभी बंदा सिर्फ एक बात ऐसी बोलता है जो अल्लाह त'आला की नाराज़गी का सबब होती है और उस को ये अन्दाज़ा नहीं होता कि ये बात (कितनी ज़ुबानों से होती हुई) कहाँ तक पहुँच जायेगी और वही एक बात उस के लिये क्रियामत में अल्लाह त'आला की नाराज़गी का सबब बन जाती है।

(المستدرک للحاکم، اردو، کتاب الایمان، ج 1، ص 97، 98، 136)

इस में उन लोगों के लिये सबक है जो बिना सोचे समझे कुछ भी बोल देते हैं और फिर उन की बात आग की तरह फैल जाती है। हमारे मुँह से निकली हुई बातें जब लोगों के कानों में पहुँचती हैं तो फिर वहीं तक नहीं रहती बल्कि कई कानों तक पहुँच जाती हैं, लिहाजा काफी सोच समझ कर बात करनी चाहिये।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स (फेसबुक, वॉट्सएप्प और इसी तरह के दीगर प्लेटफॉर्मस) पर लिखने वालों के लिये भी लम्हा -ए- फिक्र है क्योंकि इन प्लेटफॉर्मस पर लिखी गयी बातों को कितने लोग पढ़ते हैं, कॉपी पेस्ट करते हैं और शेयर करते हैं, इस का हमें अन्दाज़ा तक नहीं होता, इसी लिये चाहिये कि ज़रूरी बातें लिखें और फुज़ूल को तर्क कर दें।

### अब्दे मुस्तफ़ा

## मस्जिदों के इमामों के हालात

अहले सुन्नत की मस्जिदों में इमामत करने वालों के जो हालात हैं वो बहुत बुरे हो चुके हैं। इमामत की अहमियत और ज़रूरत से हर मुसलमान वाकिफ़ है और इस की फज़ीलत के लिये सिर्फ इतना कहना काफी होगा कि अल्लाह के नबी, हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ ने भी इमामत फरमायी है।

अब जो हम बयान करने जा रहे हैं वो आँखों देखी बातें हैं जो हम ने कुछ मस्जिदों में देखी है वरना अल्लाह बेहतर जानता है कि कहाँ कहाँ ऐसी ज़बूँ हाली है।

इमाम ऐसा शख्स है जिस के पास सनद (डिग्री) तो है लेकिन नमाज़ के बुनियादी मसाइल तक का इल्म नहीं है।

हम मानते हैं कि इमामत के लिये आलिम होना शर्त नहीं है लेकिन इस का ये मतलब हरगिज़ नहीं है कि जिस को फराइज़ो वाजिबात तक का इल्म ना हो वो इमाम बन जाये।

ऐसे लोग इमामत कर रहे हैं जिन्हें फ़र्ज़ और वाजिब की तारीफ़ भी सहीह से मालूम नहीं है। ऐसे लोग अपने साथ साथ अपने पीछे खड़े होने वाले लोगों की नमाज़ों को भी बरबाद कर रहे हैं।

अब ज़ुल्म की इन्तिहा देखिये कि जुम्आ के दिन वही इमाम तक्ररीर भी करता है।

अब ये तो नहीं कहा जा सकता कि तक्ररीर करने के लिये भी आलिम होना ज़रूरी नहीं

क्योंकि उलमा ने वाज़ेह तौर पर लिखा है कि ग़ैरे आलिम का तक्ररीर करना हaram है।

इस के इलावा मुहल्ले में आये दिन महफिल -ए- मीलाद का इन्कि़ाद होता रहता है जिस में वही इमाम साहिब मुक़र्रिर -ए- खुसूसी होते हैं।

जब ऐसे लोग तक्ररीर करते हैं तो जो मुँह में आता है बोल कर निकल जाते हैं जिस की वजह से आवाम गुमराह होती है।

नमाज़ें तो गईं उपर से ईमान भी खतरे में आ गया!

बाज़ अवकात इमाम अगर कहीं गया है तो उस की ग़ैर मौजूदगी में मुअज़्ज़िन साहिब इमामत के लिये खड़े हो जाते हैं जिन से नमाज़ के फराइज़ पूछे जायें तो जवाब में कहते हैं नमाज़ में पाँच फराइज़ हैं (फजर ता इशा) और क़िरा'अत में तो ऐसी रूहानियत होती है कि कुछ हुरूप बल्कि मुकम्मल आयत ही सुनायी नहीं देती।

बयान करने को लम्बी दास्तान है लेकिन यही बहुत बड़ी बात है कि लोगों की नमाज़ों के साथ साथ उन का ईमान भी खतरे में हैं!

अब इस का ज़िम्मेदार कौन है? इस की इस्लाह कैसे मुमकिन है? आवाम को क्या करना चाहिये? इमाम का इन्तिखाब कैसे हो?.....? इन सब बातों पर हमारे अकाबिर उलमा को तवज्जोह देने की ज़रूरत है।

हर अहले इल्म की भी ज़िम्मेदारी बनती है कि जिस तरह हो सके इस मामले में आवाज़ बुलंद करने की कोशिश करें।

**अब्दे मुस्तफ़ा**

## मंगनी (इंगेजमेंट)

मंगनी दरअस्तल निकाह का वादा है, अगर ये रस्म शरई तकाज़ों के मुताबिक की जाए तो जायज़ है और इस में लड़के वाले या लड़की वाले, दोनों का एक दूसरे को तोहफे देना ज़रूरी नहीं है।

अगर अंगूठी देते हैं तो ये नहीं होना चाहिए के लड़का खुद लड़की को अपने हाथ से अंगूठी पहनाये क्योंकि मंगनी से वो मिया बीवी नहीं बन जाते बल्कि मंगनी के बाद भी इन का आपस में शरई पर्दा करना ज़रूरी है।

अगर निकाह में मंगनी न भी हो जब भी कोई हर्ज नहीं, कुछ लोग इसे निकाह का हिस्सा समझते हैं हालाँकि ऐसा नहीं है, न ये निकाह का हिस्सा है और न निकाह के लिए ज़रूरी है। मुर्व्वजा मंगनी की रस्म सब से पहले हिन्दुस्तान में ही शुरू हुई और हिन्दुओं से मुसलमानों में आयी। (जैसा के मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी अलैहिरहमा ने अपनी किताब इस्लामी ज़िन्दगी में लिखा है)

आज कल मंगनी की रस्म बहुत सी गैर शरई रस्मों का मजमुआ बन गयी है। गाने बजाना, लड़को और लड़कियों का बेपर्दा जमा होना, आपस में हसी मज़ाक़ करना, ये सब हराम है और कई जगहों पर लड़के को सोने की अंगूठी पहनाई जाती है हालाँकि मर्द पर सोना पहनना हराम है।

कुछ बूढ़ी दादियों ने हज़रते फ़ातिमा रदिकल्लाहु त'आला अन्हा के बारे में ये बातें घड़ रखी हैं कि उन की मंगनी पर जन्नत से अंगूठियों के तोहफे आये थे ये सब झूट और मनघड़त है।

(انظر: فتاویٰ یورپ و برطانیہ، ص 290، 291)

## अब्दे मुस्ताफ़ा

### फ़िक्ह में गंदी बातें

कुछ ऐसे लोग जिन्हें शायद इल्म रिएक्शन कर गया है और साइड इफेक्ट की वजह से दिमागी तवाज़ुन बिगड़ गया है वो ये कहते हैं कि फ़िक्ह और बिल खुसूस फ़िक्हे हनफी की किताबों में गंदी गंदी बातें मौजूद हैं मसलन शर्मगाह को छूने, आपस में मिलाने और सोहबत की बातें और मनी, मज़ी और गंदे खून के बारे में बहसें मौजूद हैं।

अब अगर देखा जाये तो हदीस की किताबों में भी ऐसी गंदी गंदी बातें मौजूद हैं!

कुतुब -ए- अहादीस में ऐसे अबवाब मौजूद हैं जिन के नाम कुछ इस तरह हैं :

शर्मगाह छू लेने से वुजू,  
 शर्मगाहों के मिल जाने का हूक़्म,  
 औरत की पिछली शर्मगाह में सोहबत,  
 तमाम बीवियों से सोहबत करने के बाद वुजू,  
 एहतिलाम में तरी देखना,  
 मज़ी से वुजू,  
 हैज़ वाली औरत के साथ सोहबत वगैराहुमा।  
 इन के इलावा भी ऐसी बहुत सारी बातें मौजूद हैं जिन्हें फ़िक्ह की किताबों में दिखा कर "गंदी"  
 से ताबीर किया जाता है। ऐसे लोगों को चाहिये कि अच्छी बातों पर मुश्तमिल किसी किताब  
 को पढ़ें और कुतुब-ए- अहादीस को हाथ भी ना लगायें।

## अब्दे मुस्तफ़ा

### अल्लाह वालों का कुर्ब

हज़रते अबू सईद खुदरी रिवायत करते हैं कि नबीय्ये करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया :  
 तुम से पहले के लोगों में एक शख्स ने 99 क़त्ल किये फिर वो इलाके के सब से बड़े आलिम के  
 पास गया और बताया कि उस ने 99 क़त्ल किये हैं (फिर पूछा कि) तौबा की गुंजाइश है?  
 राहिब ने जवाब दिया: नहीं, उस शख्स ने उस राहिब को भी क़त्ल कर दिया और यूँ पूरे 100  
 हो गये।

फिर वो शख्स एक बड़े आलिम के पास गया और पूछा कि क्या उस के लिये तौबा की गुंजाइश  
 है? आलिम ने कहा कि हाँ! तौबा की क़बूलियत में कौन हाइल हो सकता है, जाओ तुम फुलॉ  
 जगह जाओ, वहाँ कुछ लोग अल्लाह त'आला की इबादत कर रहे हैं, तुम उन के साथ  
 अल्लाह की इबादत करो और अपनी ज़मीन की तरफ वापस ना जाओ क्योंकि वो बुरी जगह  
 है।

वो शख्स रवाना हुआ, जब आधे रास्ते पहुँचा तो मौत ने आ लिया! अब उस शख्स के बारे में  
 रहमत के फिरिश्ते और अज़ाब के फिरिश्तों में इख़्तिलाफ़ हो गया। रहमत के फिरिश्तों ने कहा  
 कि ये शख्स तौबा करता हुआ और दिल से अल्लाह की तरफ मुतवज्जेह होता हुआ आ रहा  
 था, और अज़ाब के फिरिश्तों ने कहा कि इस ने कोई नेक अमल नहीं किया।

फिर इनके पास आदमी की सूरत में एक फिरिश्ता आया जिसे इन्होंने हकम (फैसला देने वाला) बना दिया, उस ने कहा कि दोनों तरफ की ज़मीनों की पैमाइश करो और ये दोनों में से जिस इलाक़े के ज़्यादा करीब होगा उसी में शुमार होगा।

जब पैमाइश हुई तो वो शख्स उस के ज़्यादा करीब था जहाँ जाने का इरादा किया था, फिर रहमत के फिरिश्तों ने उस शख्स को ले लिया।

हज़रते हसन बसरी ने कहा कि जब उस शख्स पर मौत आयी तो वो सीने के बल (खिसक कर अपनी मंज़िल के) करीब हो गया एक और सनद में ये अल्फाज़ हैं कि अल्लाह त'आला ने (उस की बस्ती की) ज़मीन को हुक्म दिया कि तुम दूर हो जाओ और उस (नेक लोगों की बस्ती की) ज़मीन को हुक्म दिया कि तुम करीब हो जाओ।

(ملخصاً: صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب قبول توبة القاتل وان كثر قتله، ص 1107، ر 2766-

و صحيح بخاری، كتاب الانبياء، ص 856، ر 3283، ط مکتبة المدینة کراچی-

وسنن ابن ماجه، اردو ترجمہ مع شرح، ج 3، ص 664، ر 2621، 2622-

وسند احمد بن حنبل، اردو، ج 5، ص 62، ر 11171-

و صحيح ابن حبان، اردو، ج 1، ص 689، كتاب الرقائق، باب التوبة، ر 611-

وسند ابو يعلى، اردو، من مسند ابی سعید الخدری، ج 1، ص 573، ر 1029-

والمعجم الكبير للطبرانی، إلكترونيكيشن، ص 15977-

وسنن الکبری للبيهقي)

इस में कोई शक नहीं कि अल्लाह त'आला ही अपने बन्दों के गुनाहों को बख्शने वाला है लेकिन ये भी सच है कि जब दरमियान में उस के प्यारे बन्दों का वसीला होता है तो वो इस क़द्र अता फरमाता है कि अपने प्यारे बन्दों का कुर्ब हासिल करने वालों की भी मग़्फ़िरत फरमा देता है।

जिस तरह किसी दरख्त की जड़ में डाले गये पानी से आस पास के पौधों को सैराबी मिलती है, इसी तरह अल्लाह वालों का कुर्ब हासिल करने से अल्लाह का कुर्ब नसीब होता है।

अल्लामा गुलाम रसूल सईदी ने बड़ी प्यारी बात लिख दी, आप लिखते हैं कि अगर कोई गुनाहगार इन (अल्लाह के प्यारों) के पास जा कर तौबा करने का सिर्फ़ इरादा करे, अभी वहाँ गया ना हो और ना तौबा की हो तब भी बख़्श दिया जाता है तो जो लोग इन के पास जाकर



इन के हाथ पर बै'अत हो, तौबा करें और उन के वज़ाइफ़ पर अमल करें, उन के मर्तबे और मक़ाम का क्या आलम होगा।

मज़ीद लिखते हैं कि लैलतुल क़द्र का बड़ा मर्तबा है, एक रात की इबादत का दर्जा हज़ार महीनों से ज़्यादा है लेकिन अगर कोई इस रात को पा कर इबादत ना करे तो उसे कोई अजर नहीं मिलता लेकिन औलियाउल्लाह की क्या शान है कि कोई उन के पास जा जाकर इबादत और तौबा नहीं करता (बल्कि कुर्ब हासिल करने के लिये) सिर्फ़ जाने की निय्यत कर लेता है तो बख़्श दिया जाता है।

(ملخصاً: شرح صحيح مسلم، ج 7، ص 531)

जब औलियाउल्लाह के कुर्ब का ये आलम है तो फिर इमामुल अम्बिया ﷺ की बारगाह में हाज़िर हो कर अपने गुनाहों से तौबा करने वालों पर अल्लाह त'आला की मेहरबानी का क्या आलम होगा।

जो इन के दर पर अपना दामन फैलाते होंगे उन पर किस क़द्र अतायें होती होंगी, इस का अन्दाज़ा लगाना भी मुमकिन नहीं।

**अब्दे मुस्तफ़ा**

**मैं तो हूँ अब्दे मुस्तफ़ा**

जब हम खुद को अब्दे मुस्तफ़ा कहते हैं तो कुछ लोगों को इस से बहुत तक्लीफ़ होती है। उन की तक्लीफ़ का अन्दाज़ा इस बात से लगायें कि इस नाम को ले कर शिकों कुफ़ तक चले जाते हैं।

होना तो ये चाहिये था कि मोमिन से हुस्ने ज़न की बिना पर "अब्दे मुस्तफ़ा" का माना "गुलामे मुस्तफ़ा" लिया जाये लेकिन यहाँ तक कहा गया कि इस नाम से "शिक की बू" आती है। लफ़्ज़े "अब्द" का एक माना गुलाम भी है लिहाज़ा इसी पर बहस ख़त्म हो जाती है लेकिन फिर

ये सवाल किया जाता है कि क्या नबीय्ये करीम ﷺ के ज़माने में किसी ने ये नाम रखा?

हम कहते हैं कि ये ज़रूरी नहीं कि जो काम हुज़ूर ﷺ के ज़माने में ना हुआ हो वो ग़लत है बल्कि जो उसूल -ए- शरा के खिलाफ़ हो तो ग़लत है, इतनी मोटी बात भी अगर समझ ना आये तो इस में हमारा कोई क़सूर नहीं।

ज़माने की बात आ गई है तो एक रिवायत में है कि खलीफा बनाने के बाद हज़रते उमर फारूक रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने खुतबा देते हुये इरशाद फरमाया :

وہنر عبدہ و خادمہ

यानी मैं अब्दे मुस्तफ़ा और खादिम -ए- मुस्तफ़ा हूँ

इस रिवायत को इमाम हाकिम ने नक़ल करने के बाद सहीह करार दिया है और मज़ीद हवाले ज़ेल में बयान किये जाते हैं :

(انظر: المستدرک للحاکم، کتاب العلم، ج 1، ص 447، 439-

والمستدرک للحاکم، اردو، کتاب العلم، ج 1، ص 250، 434-

والریاض النضرة فی مناقب العشرة، الفصل التاسع فی ذکر نبذة من فضائله رضی اللہ تعالیٰ عنہ، ص 315-

وکنز العمال، اردو، خلافت کے بعد حضرت عمر کا خطبہ، ج 5، ص 337، 14184-

ودراسة نقدیة فی المرویات الواردة فی شخصیة عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ، ص 586-

اخبار عمر و اخبار عبد اللہ بن عمر، خطبہ فی الحکم، ص 55-

تاریخ مدینة دمشق، ج 44، عمر بن الخطاب، ص 264، 266-

وفتاوی رضویہ، ج 30، ص 462، 463-

وازالة الخفاء بہ حوالہ ملفوظات اعلیٰ حضرت، ج 1، ص 104-

وفیضان فاروق اعظم، ج 2، ص 39)

इमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रहीमहुल्लाह अपने नाम के साथ अब्दे मुस्तफ़ा लिखा करते थे, जब आप से इस के मुताल्लिक दरयाफ्त किया गया तो फरमाया :

अल्लाह त'आला फरमाता है :

وَأَنْكِحُوا الْأَيَّامِي مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ (النور: 32)

तर्जुमा : और निकाह करो अपनों में उन का जो बे निकाह हो और अपने लाइक बन्दों और कनीज़ों का।

अब इसे भी शिर्क कह दीजिये! (कि इस में "इबादुकुम" का लफज़ है।)

आला हज़रत रहीमहुल्लाह ने इस पर तफसील से कलाम फरमाया है।

(انظر: ملفوظات اعلیٰ حضرت، ج 1، ص 104۔)

وانظر احکام شریعت، ص 235۔

وفتاویٰ افریقہ، ص 22)

हज़रत अल्लामा मुफ्ती अता मुशाहिदी लिखते हैं कि गैरुल्लाह की तरफ "अब्द" की इज़ाफत जाइज़ व दुरुस्त है।

इरशाद-ए- रब्बानी है :

قُلْ يُعْبَادِي الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ ۖ (الزمر: 53)

तर्जुमा : ए महबूब! आप फरमा दीजिये कि ए मेरे बन्दों! जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया है, अल्लाह की रहमत से मायूस ना हो।

وَانكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۖ (النور: 32)

तर्जुमा : और निकाह करो अपनों में उन का जो बे निकाह हो और अपने लाइक बन्दों और कनीज़ों का।

अहादीस -ए- मुबारका में भी अब्द की इज़ाफत गैरुल्लाह की तरफ (मौजूद) है:

ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من كاتب عبده على مائة اوقية فاداه

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب العتق، باب اعتاق العبد المشترك... الخ، ص 295)

तर्जुमा : रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि जिस ने अपने गुलाम से सौ उक़्या पर बदल किताबत किया।

इस हदीस में अब्द की इज़ाफत गैरुल्लाह की तरफ है, इसी इज़ाफत के माना में इन अहादीस में भी "अब्द" का इस्तिमाल हुआ है :

من اعتق شر كاله في عبد و كان له مال يبلغ ثمن العبد قوم العبد عليه..... متفق عليه

و من اعتق شقصا في عبد اعتق كله

(المرجع السابق، ص 294)

अमीरुल मु'मिनीन, हज़रते उमर फारूक रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने खुतबे में खुद को रसूलुल्लाह ﷺ का अब्द और खादिम कहा।

(کنز العمال)

कुतुब -ए- फिक्ह में गैरुल्लाह की जानिब अब्द की इज़ाफत की मिसालें किताबुन निकाह, किताबुल इताक़ वगैरा में देखी जा सकती हैं।

(انظر: فتاویٰ مشاہدی، ج 1، ص 136، 137)

बातें और दलाइल तो बहुत हैं लेकिन समझने वालों के लिये इतना काफ़ी है, जो समझना ही नहीं चाहते उन के लिये पूरा दफ़्तर भी नाकाफ़ी है।

**अब्दे मुस्तफ़ा**

## हमारी पसंद

हर लड़का चाहता है कि उसे अच्छी लड़की मिले जो ज़िन्दगी भर उस का साथ निभाए, इसी लिये रिश्ता ढूँढते वक़्त काफ़ी छान बीन भी की जाती है।

लड़की भी चाहती है कि उसे ढेर सारा प्यार देने वाला शौहर मिले जो उस का हमेशा खयाल रखे लेकिन ऐसा बहुत कम होता है क्योंकि हम इन चीज़ों को हुस्न और दौलत के बाज़ार में तलाश करते हैं।

लड़की के घर वाले लड़के की आमदनी, घर और दौलत में खुशी ढूँढते हैं तो लड़के वालों को भी दौलत और हुस्न में खुशियों की बहार नज़र आती है लेकिन जब ये चीज़ें वक़्त के साथ चली जाती हैं तो सब कुछ ख़त्म हो जाता है।

ये चीज़ें हमें सिर्फ "दीनदारी" में मिल सकती हैं जिसे आज कल बहुत कम लोग देखते हैं।

**अब्दे मुस्तफ़ा**

## एक लड़की चाहिये

एक लड़का है, जिसे आप "मौलवी टाईप" कह सकते हैं क्योंकि वो दाढ़ी नहीं मुंडाता, कोट पेंट नहीं पहनता, सिनेमा घरों में फिल्म देखने नहीं जाता, गाने नहीं सुनता, लड़कियों के साथ छेड़ छाड़ नहीं करता, सिगरेट, तम्बाकू वगैरह को हाथ तक नहीं लगाता, गालियाँ भी देने नहीं आती और इस के इलावा भी बहुत सी बातें हैं जो उस में नहीं पायी जाती।

अब उस लड़के को अपनी इस लुत्फो लज़्जत (इंटरटेनमेंट) से खाली ज़िन्दगी में एक लड़की चाहिये जिस से वो निकाह कर के उसे "बोर" कर सके और अपनी तरह उसे भी "ब्लेक एन्ड वाइट" बना सके।

एक तो ऐसे लड़के से निकाह करना ही बहुत बड़ी बात है ऊपर से जनाब के नखरे तो देखिये कि शराइत और फ़रमाइशों की एक लम्बी चौड़ी फेहरिस्त (लिस्ट) भी तैयार कर रखी है जिसे हम यहाँ नक़ल कर रहे हैं।

कारईन (पढ़ने वाले) बतायें कि ऐसे लड़के से कौन निकाह करेगी?

एक लड़की चाहिये जो :

(1) अहले सुन्नत के अक्राइद से पूरी तरह वाकिफ़ हो और अपनी ज़रूरत के मसाइल को बिना किसी की मदद के अज़ खुद किताबों से निकाल सके, उस के पास सनद (डिग्री) हो या ना हो, इस से कोई गर्ज नहीं बस इल्म होना चाहिये।

अगर मदरसे में पढ़ाई ना भी की हो तब भी कोई बात नहीं।

(2) सिहहत मन्द हो और उम्र बीस से तीस के दरमियान हो और रही बात खूब सूरत होने की तो असल खूब सूरती इन्सान का अख़लाक़ हैं।

लड़की के घर वालों से मुतालबात (डिमांड्स)

(3) किसी भी तरह की लेन देन नहीं होगी, अब चाहे वो नक़दी हो, जहेज़ हो, मुँह दिखायी हो या कोई और नज़राना वगैरा हो।

(4) जहेज़ में कीमती समान मसलन, गाड़ी, फ़्रिज, कूलर, ए सी, पंखा, टीवी, पलंग, सोफ़ा, गद्दे, कुर्सी, टेबल, ज़ेवरात, बर्तन, मिक्सर मशीन, ग्रिन्डर मशीन, वॉशिंग मशीन और मोबाइल हरगिज़ कुबूल नहीं किये जायेंगे और इन के इलावा कुछ देने के बजाये लड़की को कुछ दीनी किताबें दे सकते हैं।

(5) गाना बजाना बिल्कुल नहीं होना चाहिये, ना तो महफ़िल -ए- निकाह में, ना बारात में और ना किसी और हवाले से।

इस के साथ साथ औरतों के गीत वगैरा गाने पर भी पाबंदी होनी चाहिये।

(6) गैर शरई और गैर ज़रूरी रस्मो रिवाज की सख़्त मनाही है।

हल्दी की रस्म, गाने और ढोल बजाने की रस्म, लगन लगाने और संदल उतारने चढ़ाने की रस्म, सिन्दूर लगाने की रस्म, गालियाँ देने की रस्म, मुँह दिखाई और जेब भरायी की रस्म, रात को जागने और सुबह में शादी की रस्म, कपड़ों की टोकरी बदलने की रस्म, किसी को

गोद में उठाने की तो किसी को धागे से नापने की रस्म, किसी को मीठा खिलाने तो किसी को जूता चुराने की रस्म, दूध में अँगूठी ढूँढने की रस्म और विदाई के वक़्त की छत्तीस क्रिस्म की रस्में, सब पर सख्ती से पाबंदी आईद होनी चाहिये, दूसरे अल्फाज़ में यूँ समझ लें कि सिर्फ़ निकाह होगा।

(7) औरतों और लड़कियों की भीड़ बिल्कुल नहीं होनी चाहिये, अगर आप ने दावत दी है तो उन के लिये बिल्कुल अलग इन्तिज़ाम होना चाहिये ताकि मर्द वा औरत एक महफिल में बे पर्दा जमा ना हो।

बेहतर होगा कि औरतों को दावत ना दें और रही बात बारात की तो उस में दो या तीन से ज़्यादा औरतें नहीं होंगी।

(8) कुल (टोटल) बरातियों की तादाद बीस से भी कम होगी जिन के लिये खाना तैयार करने की इजाज़त नहीं है।

(9) बारात दिन में आयेगी और (चंद घंटों बाद) दिन में ही वापसी होगी।

(10) लड़के के उस्ताज़ -ए- गिरामी निकाह पढ़ायेंगे और बताने का मक़सद ये है कि वक़्त निकाह किसी तरह की बात ना हो आप के इलाक़े में अगर कोई अन्जुमन, कमिटी या तन्जीम है जो लड़के वालों से मख़सूस रक़म (मस्जिद, मदरसा और क़ब्रिस्तान के लिये) लेती है तो वो पहले ही अदा कर दी जायेगी लेकिन निकाह में उन की किसी भी क्रिस्म की कोई दखल अन्दाज़ी नहीं होनी चाहिये।

अब बतायें कि निकाह के लिये कौन तैय्यार होगा? लड़के का कहना है कि इस में इज़ाफ़ा भी करना है, ये क्या कम था जो इज़ाफ़े की ज़रूरत आन पड़ी?

दोस्तों ने समझाया कि इन शराइत को देख कर कोई तैय्यार नहीं होगा लेकिन लड़का है कि ज़िद पर क़ाइम है और कहता है कि हर लड़के की सोच ऐसी ही होनी चाहिये।

अब आप ही समझाइये कि ये दौर डी जे, पार्टी, मस्ती और फुल इंटरटेनमेंट का है, ऐसे रंगीन ज़माने में कौन आप की ब्लेक एण्ड वाइट पर तवज्जोह देगा।

अगर हर लड़के की सोच ऐसी हो गयी तो.....

**अब्दे मुस्तफ़ा**

**खुशी से**

लड़की के बाप ने जहेज़ में लड़के को खुशी से एक लाख रुपए नक़द दी,



फिर खुशी से एक गाड़ी दी,  
फिर खुशी से एक लाख रूपए का सामान दिया,  
फिर खुशी से दो तीन सौ बरातियों को खाना खिलाया,  
फिर खुशी से लड़की दी.....,

और इन के लिये लाखों रूपए कर्ज लिये, वो भी खुशी से!

ये खुशी हमारी समझ से बाहर है, ये उन्हीं को समझ में आती है जो नक़दी और जहेज़ का मुतालबा (डिमान्ड) तो नहीं करते लेकिन फिर भी "खुशी" के नाम पर सब कुछ ले ही लेते हैं। लाखों रूपए लेने के बाद कहते हैं कि हम ने तो नहीं माँगा था, उन्होंने खुशी से दिया तो हम ने रख लिया।

सच तो ये है कि अगरचे सराहतन (किलयर) माँग ना भी की जाये तो भी ऐसा माहौल बन चुका है कि जहेज़ देना ही पड़ता है (खुशी से) और अगर ना दे तो फिर देखिये कि कौन कितना खुश होता है।

बोलो या ना बोलो, ये तो तय है कि कुछ ना कुछ मिलेगा और देना तो पड़ेगा।

एक मज़े की बात ये है कि जो लोग डिमाण्ड नहीं करते वो डिमाण्ड करने वालों से भी खतरनाक होते हैं, जी हाँ! डिमाण्ड करने वाले बिल्कुल किलयर बता देते हैं कि हमें इतना चाहिये लेकिन डिमाण्ड ना करने वाले लड़की वालों को परेशानी में डाल देते हैं और वो ये है कि जब डिमाण्ड ना की जाये तो लड़की वालों के दिलो दिमाग में कई तरह की बातें आ रही होती हैं।

मसलन :

लड़के वालों ने डिमाण्ड नहीं किया है तो इस का मतलब ये नहीं कि हमें कुछ नहीं देना है बल्कि हमें अच्छे से समान वगैरा देना होगा और जब उन्होंने नक़दी की डिमाण्ड नहीं की है तो समान ज़रा बढ़ा कर देना चाहिये और बरातियों के लिये खाने पीने का इन्तिज़ाम भी अच्छी तरह करना होगा वरना कहा जायेगा कि एक तो हम ने डिमाण्ड नहीं की फिर भी खातिर दारी अच्छी तरह नहीं हुई।

अब डिमाण्ड करने वाले या ना करने वाले दोनो ही किसी ना किसी तरह से गलत हैं लिहाज़ा होना ये चाहिये कि बिल्कुल सराहत के साथ इंकार किया जाये कि हम ना तो नक़दी लेंगे और ना जहेज़ और अगर आप ने कोई कीमती चीज़ जहेज़ में दी तो वो हरगिज़ कुबूल नहीं की जायेगी।

डिमाण्ड ना करना और बिल्कुल इंकार करना या मना कर देना, इन में फर्क है।  
इस तरह भी किया जा सकता है कि लड़की वालों से इस बात की डिमाण्ड की जाये कि किसी भी तरह की कोई लेन देन नहीं होनी चाहिये।  
डिमाण्ड ना कर के अपनी खामोशी को बोलने का मौका ना दीजिये बल्कि सराहतन (तफसील के साथ) मना कर के शुब्हात को खत्म कर दीजिये।

## अब्दे मुस्तफ़ा

### मुसलमानों को इक्वितसादी ख़तरा

जो हालात सौ साल पहले आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान हनफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अलैहिर्रहमह) के वक़्त में थे, वही हालात यकलख़्त पलट रहे हैं।  
इस मुजद्दिदे क़ौमो मिल्लत ने, तक्रीबन सौ साल पहले ही, अपनी खुदा-दाद सलाहियतों की बुनियाद पर इस क़ौमे मुस्लिम को, इन काफ़िरो की 'चालों' और उन के 'दज़ल' व 'फरेब' से आगाह किया था। मगर, आह सद आह, हम ने इस अज़ीम मुफ़क्किर को एक ही शुअबे तक महदूद कर दिया।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान हनफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अलैहिर्रहमह) ने अपनी किताब "अल् महज्जतुल् मुअतमनह फ़ी आयतिल् मुम्तह्नह" में इरशाद फ़रमाया:  
"दुश्मन अपने फरीक़ के खिलाफ़ तीन चालें चलता है:

- (1) क़त्ल; ताकि दुश्मन का बिल्कुल वुजूद ही ख़त्म हो जाये। अगर ये न हो सके तो...
- (2) जलावतनी; ताकि दुश्मन अपने मुल्क व इलाक़े से निकल कर दूर चला जाये। अगर ये भी न हो पाये तो...
- (3) इक्वितसादी बॉयकॉट (Economic Boycott); ताकि ग़ुरबत व मुफ़िलसी से दो चार हो कर, हमारा गुलाम बन जाये।"

आप देखें कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान हनफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अलैहिर्रहमह) की फ़रासत व फ़िक्र कैसे साबित हुई, और हो रही है। कुफ़्रार ने मुसलमानों के खिलाफ़ यही चालें माज़ी में चलीं और आज भी चल रहे हैं। ब-तरतीब देखें:

- (1) क़त्ल: मुसलमानों के क़त्ल के लिये उस वक़्त, जिहाद का उमूमी फ़तवा दिया जा रहा था, ताकि बे इमाम व खलीफ़ा क़लील मुसलमानाने हिन्द, काफ़िरो की अक्सरियत के हाथों क़त्ल

हो जायें, आला हज़रत (अलैहिर्रहमह) ने इसी हिकमत के पेशे नज़र हिन्दुस्तान में जिहाद का फ़तवा न दिया।

और आज 'देशद्रोही', 'गौहत्या', 'कोरोना वायरस' वगैरह का इल्ज़ाम आइद कर के, मॉब लिन्चिंग के ज़रिये मुसलमानों का क़त्ल हो रहा है।

(2) जलावतनी: पहले 'तहरीके हिजरत (Hijrat Movement)' चलाई गई, जिस के बहाने मुसलमानाने हिन्द को हिन्दुस्तान से निकालने के लिये कोशिशें की गई।

तो आज CAA, NRC, NPR पेश किये जा रहे हैं, ताकि मुसलमानों की जलावतनी हो सके।

(3) इक़तिसादी बॉयकॉट: उस वक़्त 'तहरीके ख़िलाफ़त (Khilafat Movement)' और 'तहरीके तर्क मुवालात [(Non Cooperation Movement)]' (जिस का सही नाम तहरीके अदमे त'आवुन है) चलाई गई, ताकि मुसलमान अपना सारा का सारा सरमाया, जोश में आकर तुर्की ख़ाना कर दें, और जितने मुसलमान अंग्रेज़ी कम्पनियों में सरकारी मुलाज़िम हैं, वो अपनी अपनी नौकरियाँ छोड़ दें और गरीब व लाचार होकर हिन्दुओं के गुलाम बन जायें। और आज भी मदरसा बोर्ड की मान्यता ख़त्म करने की पूरी पूरी कोशिश जारी है, ताकि मुसलमानों की सरकारी नौकरियाँ ख़त्म हो जायें। इन हिन्दुओं की तरफ़ से सिविल इम्तिहानात में भी उर्दू को ख़त्म करने की माँग की जा रही है, ताकि कोई भी मुसलमान ऑफिसर लाइन में ना जा पाये।

और अब कोरोना के नाम पर इनका 'इक़तिसादी बॉयकॉट' उरूज पर होता जा रहा है, ताकि मुफ़िलस मुसलमानों को इन मुशरिकीन का गुलाम बना डालें।

मगर इन तीन मशहूर चालों के अलावा, एक चाल का ज़िक्र कुरआने करीम ने मज़ीद किया है, और वो है 'क़ैद',

यानी मुसलमानों को मौक़ा पाते ही किसी ना किसी तरह क़ैदी बना दिया जाये, ताकि इसकी तमाम हिस्स व हरकत, उस तारीक़ कोठरी में अंधी होकर अपना दम तोड़ दे। आज भी सैकड़ों मुसलमान नौजवान जेल की सलाखों के पीछे अपना दम घोटने पर मजबूर हैं। चूँकि इन मुशरिकीन ने उन पर तरह तरह की तुहमतें व इल्ज़ामात लगाये और उन के ख़िलाफ़ मुक़दमात दर्ज किये।

ख़बरदार!

अब कोई ये बहाना नहीं बना सकता है, कि: "हमें तो कुफ़्रार की इन चालों के बारे में पता ही नहीं था",

ये बहाना इसलिये बातिल है, चूँकि कुफ़ार की तमाम चालें कुरआन व हदीस में हजारों साल पहले ही मज़कूर हो चुकी थीं मगर हम ने उन्हें न जाना और न ही जानने की कोशिश की।

कुफ़ारे मक्का ने आका (ﷺ) के साथ जो बद सुलूकियाँ की थीं, वो भी इन्हीं चार चालों में से ही थीं, कुरआन मजीद उन के दज़ल व फरेब का ज़िक्र कुछ इस तरह से कर रहा है:

"وَإِذْ يَبْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا الْيَثْبُتُونَ أَوْ يَقْتُلُونَ أَوْ يُخْرِجُونَ" ---!

"और ऐ महबूब! याद करो जब काफ़िर तुम्हारे साथ धोका करते थे, कि तुम्हें 'बन्द कर लें' या 'शहीद कर दें' या 'निकाल दें'...!"

### [तरजमा-ए-कंज़ुल ईमान, 8:30]

इस आयत में गौर करें कि किस तरह अल्लाह तआला ने हमें इन कुफ़ार की चालों से आगाह किया, यहाँ तीन चालों का ज़िक्र है:

- (1) कैद;
- (2) क़त्ल;
- (3) जलावतनी;

अब रह गया 'इस्तिसादी बॉयकॉट', तो इस की तअलीम हमें 'शिअबे अबी तालिब' से मिल रही है। इमाम बैहकी ने 'दलाइलुन् नुबुव्वह' में और इब्ने कसीर ने 'अल बिदाया वन् निहाया' में 'शिअबे अबी तालिब' के वाक़िये को तफ़सीलन ज़िक्र किया। कुफ़ारे मक्का ने 'बनी हाशिम' और 'बनी मुत्तलिब' के खिलाफ़ जो मक्कारियाँ इख़्तियार की, उन का एक किताबचा तैयार किया, और उसे कअब-ए-मुअज़्ज़मा में लटका दिया। कुतुबे सियर व अह़ादीस के अल्फाज़ कुछ इस तरह हैं:

"--اجتمعوا علي أن يكتبوا فيما بينهم علي بني هاشم وبني المطلب أن لا يُنكِحوهم ولا يَنكحوا

إليهم، ولا يبايعوهم ولا يبتاعوا منهم؛ وكتبوا صحيفة في ذلك، وعلقوها بالكعبة، ثم عدوا علي من

أسلم، فأوثقوهم وأذوهم، واشتدّ البلاء عليهم، وعظمت الفتنة، وزلزلوا زلا لا شديداً--!"

"....कुफ़ारे मक्का इकट्ठे हुये, ताकि बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब के खिलाफ़ जो उन्होंने आपस में फैसला किया था उसे लिखें, कि वो उन (के ख़ानदान) से (शादी के लिये) न उन की बेटी लेंगे और न ही अपनी बेटी उन्हें देंगे, और न ही उन से कुछ खरीदेंगे, और न ही उन्हें कुछ बेचेंगे, और इस मुआमले में उन्होंने एक किताबचा लिखा और उस किताबचे को कअबा में

लटका दिया। फिर मुसलमानों पर जुल्म व ज़्यादती शुरू कर दी, और उन्हें कैद किया और उन्हें अज़ियतें दी और मुसलमानों पर मुसीबत सख्त हो गई और फितना बहुत बढ़ गया और उन (मुसलमानों) पर (जुल्म व सितम के) ज़लज़ले तोड़े गये..."

[رواه البيهقي في الدلائل وابن كثير في البداية]

इस इबारत में गौर करने से ये बात आश्कार हो जाती है कि कुफ़ार की एक बड़ी चाल मुसलमानों का इक़तिसाद बुहरान भी है, काबिले ज़िक्र अल्फाज़ ये हैं:

- (1) शादी के लिये उन की लड़की न लेना;
- (2) शादी के लिये उन्हें अपनी लड़की न देना;
- (3) न उन से कुछ खरीदना;
- (4) न उन्हें कुछ बेचना;

नम्बर तीन और चार 'इक़तिसादी बॉयकॉट' की खबर दे रहे हैं; जबकि साथ ही नम्बर एक और दो 'समाजी बॉयकॉट' की भी गम्माज़ी कर रहे हैं...!

अब रही बात ये कि मुसलमानों का, कुफ़ार की जानिब से होने वाले इस 'इक़तिसादी बॉयकॉट' से कैसे बचा जाये, और मुसलमानों की मईशत को मज़बूत बनाने के लिये क्या किया जाये...?

तो इस का हल भी आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान हनफ़ी कादिरी बरकाती बरेलवी (अलैहिर्रहमह) की जानिब से सुनें। आप ने अपने रिसाले 'तदबीरे फलाहो नजातो इस्लाह' में, मुसलमानों की मईशत को मज़बूत बनाने पर अमल पैरा होने की हिदायत की, जिन का खुलासा ये है:

- (1) वो चंद मुआमलात, जिन में हुकूमत की मुदाखलत लाज़िम होती हैं, उन के अलावा अपने तमाम मुआमलात को मुसलमान अपने हाथों में लें, अपने सब मुआमलात का फ़ैसला अपने आप ही करें, ताकि ये करोड़ों रुपये जो स्टाम्प व वकालत में खर्च हो जाते हैं, मुकद्दमा की वजह से घर के घर तबाह हो जाते हैं, वो इन बरबादियों से महफूज़ रहें।
- (2) मुसलमान अपनी क़ौम के सिवा किसी से कुछ न खरीदें, ताकि घर का नफ़ा घर ही में रहे। अपने खुद के कारोबार को तरक्की दें, ताकि किसी चीज़ में किसी दूसरी क़ौम के मुहताज ना रहें।

(3) बड़े शहरों के अमीर तबके के मुसलमान अपने गरीब मुसलमान भाइयों के लिये 'मुस्लिम बैंक' खोलें, ताकि हलाल तरीके से उन्हें कर्ज फराहम हो और उन की जरूरतों की ठीक से अदायगी हो जाये, साथ ही नफ़ा के वो तरीके जो शरीअते मुतहहरा में बताये हैं उन्हें अपनाया जाये, ताकि सूद जैसी बला से अमीर व गरीब, सब मुसलमानों की जान छूटे। इस सूद की अदायगी की वजह से न जाने कितने गरीब मुसलमानों की ज़मीन जायदाद, अमीर कुफ़ार की भेंट चढ़ गई।

(4) सब से अहम व अजल्ल व अशरफ व अफज़ल जो है, वो है हमारा 'दीने इस्लाम', इस पर मज़बूती से काइम रहना ही हमारे लिए कामयाबी व कामरानी का सबब है। इसी दीने मतीन पर साबित क़दम रहने के सबब, न जाने कितने ग़ुरबा व फुकरा, तख़्ते शाही की रौनक बने, मगर याद रहे कि इस दीन का तअल्लुक 'इल्मे दीन' सीखने - सिखाने से है, इल्मे दीन सीखना और उस पर अमल करना ही, दोनों जहाँ में नजात का ज़रिया है।  
मेरे प्यारों...!

ज़रा इन चार निकाती हिदायात पर गौर करें, और इन पर अमल करें, फिर देखें कि कैसे हमारे हालात में तब्दीलियाँ आनी शुरू होती हैं, इन् शा अल्लाह अज़ज़ व जल्ल!

मज़ीद ये कि हमें ये देखना होगा, कि तक्ररीबन 1400 साल पहले, या 100 साल पहले, या जब भी मुसलमानों के साथ ये सब किया गया, तो उन्होंने इस से किस तरह नजात पायी थी। हमें अपने माज़ी को अपना उस्ताद बनाना होगा, ताकि हम अपने उरुज व ज़वाल, मिलिकयत व गुलामी, फ़तह व मग़लूबियत के असबाब को अच्छी तरह जान लें और उन से खबरदार हो जायें।

अल्लाह तआला हमारे हालात पर रहम फरमाये,

**आमीन सुम्मा आमीन बिजाहिन् नबियि (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम),**

**मुहम्मद कासिमुल कादरी,**

**मुतअल्लिम: जामिया अहसनुल बरकात,**

**मारहय शरीफ़ (यू.पी.)**



## OUR PAMPHLETS

AZAAN -E- BILAL AUR SURAJ KA NIKALNA  
ALLAH TA'ALA KO UPARWALA YA ALLAH MIYAN KEHNA KAISA?  
GAANA BAJANA BAND KARO, TUM MUSALMAN HO!  
SHABE MERAJ HUZOOR GHause PAAK  
ISHQE MAJAZI  
SHABE MERAJ NALAIN ARSH PAR  
GHAIRE SAHABA MEIN RADIALLAHO TA'ALA ANHO KA ISTEMAL  
BAHAAR -E- TEHREER (5 PARTS ARE PUBLISHED)  
MUQARRIR KAISA HO?

ABDE MUSTAFA OFFICIAL

